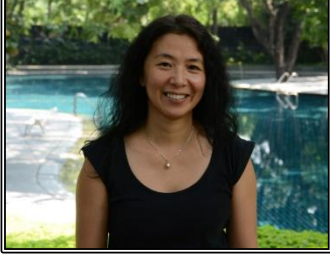


ओशो इंटरनेशनल मैडिटेशन रिज़ॉर्ट साक्षात्कार

साक्षात्कार



अगर आप सघन वृक्षों से घिरे बुद्ध ग्रोव के पास से गुजर रहे हों तो वहां पर कभी-कभी विशाल चित्र रखे हुए देखेंगे। उन चित्रों में जो ताजगी है वह आपको बुलाती हुई सी प्रतीत होती है। ये चित्र कोई निष्णात चित्रकारों द्वारा बनाये हुए नहीं हैं अपितु ध्यानियों ने बनाए हैं जिन्होंने कभी हाथ में ब्रुश नहीं लिया होगा। और उन चित्रकारों को ऐसे संचालकों ने सिखाया है जो स्वयं कुशल चित्रकार नहीं हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है क्योंकि इस कोर्स की संचालिका ध्यान शक्ति कहती हैं कि "रचनात्मकता हमारा स्वभाव है।" शक्ति सहजता से यह चित्रकला सिखाती है।

मूलतः चीन में जन्मी शक्ति यूक्रेन देश के किएव शहर में रहती है जहां वह एक इंटरनेट शॉप चलाती है। "मैं चीन में पैदा हुई और इक्कीस साल की होते-होते मैं यूक्रेन चली गई और वहां के युनिवर्सिटी में भाषा और संस्कृति के विषय में पढ़ाई करने लगी। वहीं पर कुछ सालों बाद मैंने ओशो के विषय में सुना। मैंने जो पहली ओशो पुस्तक पढ़ी वह जेन मास्टर ता हुई पर थी। मैंने वह पुस्तक आधी ही छोड़ दी, मुझे समझ में नहीं आया कि कैसे एक पन्ने पर ओशो जिस बात के लिए "हां" कहते हैं, दूसरे पन्ने पर उसी के लिए "ना" कहते हैं। फिर भी उनकी बातों में कुछ तो था जिसने मुझे उनकी ओर आकर्षित किया और धीरे-धीरे मैंने उनकी बहुत सारी पुस्तकें पढ़ीं। उसके बाद मेरे दोस्तों ने ध्यान से मेरा परिचय करवाया और मैंने एक ही साल के अंदर ओशो बॉर्न अगैन, ओशो अवैयरनेस इंटेन्सिव सत्तरी और ओशो मिस्टिक रोज कोर्सेस किये। अवैयरनेस इंटेन्सिव करते समय मुझे "अंदर कौन है" का सीधा अनुभव मिला - या कहें, अंदर कौन नहीं है उसका अनुभव हुआ। उस क्षण के बाद मैं ध्यान में पूरी तरह डूब गई।

फिर ओशो इंटरनेशनल मेडिटेशन रिज़ॉर्ट, पुणे आना उसी प्रक्रिया का एक स्वाभाविक हिस्सा था। मैंने अपना बिज़नेस इस तरह जमाया कि मैं आसानी से यहां आकर रह सकूं।

पहली बार मैं सिर्फ तीन हफ्ते रही। यहां रहना इतना विश्रान्त कर देता है कि मैं हर जगह सोती रही। चाहे ओशो ऑडिटोरियम हो या स्विमिंग पूल, या मैं जहां कहीं भी बैठ जाती, नींद आ जाती। भला ऐसे भी कोई करता है कि जहां जाए वहां सोता रहे? मुझे लगता है, पहली बार मैं इतना रिलैक्स हुई कि सारा तनाव निकलने लगा। क्योंकि मैंने पहली बार खुद को स्वीकार किया था। शायद यह मेरे आंतरिक खिलावट की शुरुआत थी: खुद पर दबाव न डालकर स्वाभाविक जीना। इसके बाद दो साल बाद जब मैं आई तो नींद में नहीं बल्कि अनेक तरह के कोर्सेस करने में समय बिताया। ओशो मल्टीवर्सिटी कोर्सेस, ओशो ध्यान, सैशन्स इत्यादि।

ओशो मल्टीवर्सिटी की मेडिटेटिव थैरेपीज़ करने से मैंने यह सीखा कि प्रेमपूर्ण रहना, दूसरों की देखभाल करना, निर्णय न लेना इन गुणों से व्यक्तित्व खुल जाता है। आपके भीतर जितनी जगह होती है उतनी ही जगह बाहर होती है, और इसी से रचनात्मकता का नैसर्गिक बहाव बहता है। रचनात्मकता अक्रिया, नॉन डुइंग से पैदा होती है। और 'ओशो डायनैमिक,' 'ओशो कुंडलिनी' और 'ईवनिंग मीटिंग' ध्यान विधियां उस प्रवाह को समृद्ध करती हैं। ये ध्यान विधियां यहां की कई गतिविधियों की कुंजी हैं। ये हमारी ऊर्जाओं को संतुलित करती हैं, समस्वरित करती हैं, और ऊर्जा को संगठित करती हैं।

ओशो मेडिटेशन रिजार्ट रचनात्मकता को खिलाने के लिए उपजाऊ भूमि देता है। यह स्थान, यह वातावरण रिलैक्सेशन के लिए सहयोगी है। यह बहुत कीमती है क्योंकि मैं जितना ज्यादा रिलैक्स रहूंगी उतना ध्यान में गहरे प्रवेश कर पाऊंगी। यहां चीजें अपने आप घटती हैं। मैं दुनिया में काम करती हूं और फिर यहां आकर अपनी बैटरी चार्ज करती हूं। यहां काम करने के लिए जो कार्य ध्यान लिविंग इन कार्यक्रम है उससे मुझे सीख मिलती है कि रोजमर्रा की जिंदगी में काम करते हुए कैसे हर क्षण मौजूद रहना। दुनिया में काम करते हुए व्यापार, प्रतिस्पर्धा, तनाव इन सबमें खो जाना आसान है। इनमें ऊर्जा अस्तव्यस्त हो जाती है, उसके बाद यहां आकर ताजगी महसूस होती है। बाहर किसी अनुभव को समझने में मुझे काफी देर लग जाती है लेकिन यहां सीखना बहुत जल्द होता है, अधिक तीव्रता से होता है। हर बार मुझे आपकी अंतर्गता के बारे में अधिक स्पष्टता मिलती है।"

OSHO®

© 2013 ओशो इंटरनेशनल
कॉपीराइट & ट्रेडमार्क जानकारी